Poems by Subashni Lata Kumar

1. ***गिरमिटयों के भेंट***

उपहार दिया जीवन के सफ़र का
थामे हाथ अंजानों का,
वो एक कदम
ख़ामोशी की गा❁ठ बनी
बांध हमें हजारों के साथ चली
जहाज़ी नरक की
वो अनगिनित लम्बी राते ॐ
तड़पते काले दिनों की
वो अनकही बातें
सहा ये सब क्यों !
किसलिए?
अतीत के तारे
आकाश में बिखरे पड़े है सारे
मजदूर और गुलाम बनकर
सात समुद्र पार पहु❁चे
उर में लिए आशाएं
उमंगें कई सारें
स्वदेश की यादे समेटे
बेगाने अपने और अपने बेगाने हुए
नए रिश्तो ॐ के डोर जुड़ने लगे
चमन में स्मृतियों के नए फूल खिलने लगे

क़ुरबानी और गुलामी के घाव सहे
संघर्षों में दिन-रात कटे
खून-पसीने से बंजर धरती सी ॐच
हरा-भरा फीजी को बनाया
फिर भी वह गिरमिटिया कहलाया
गुलामी की धूप-छाव में
तन-मन अपना वार दिया

परिश्रम और सहस से
फीजी को सवार दिया
देख गन्ने की खेतों की हरयाली
आज झूम रही है डाली-डाली
कण-कण फीजी का लहराया
गिरमिटयों का भेंट रंग लाया |

2. **मन मेरे**

मन मेरे, तू धीरज धरता चल
अश्रु का अमृत चखता चल
क्यों ऊंची उड़ाने भरता है ?
जरा थम-थम तू बढ़ता चल
ये चंचल नयन रिझाते तुझे
वास्तविकता से दूर ले जाते तुझे
पर तू मोह-माया में न फस
संभल-संभाल पग रखता चल
आधुनिक चमक-धमक की जाल में
बहकता क्यों
झूठी आसों पर
क्षण-क्षण न यू निराश कर
बस साथ मेरे टहलता चल
बन्धनों में अब तू न बंधेगा
किसी के रोके अब तू न थमेगा
स्वर्ण पिंजरे की लालसा छोड़
मन मेरे ,
तू विचरता संभालता चल |

3. ***बाका ट्री, तेरे बिन***

घने पत्तों की झुरमुट से झाके
मन-मोहक मधुर शीत बहाए
बाहे फैलाएं, पास बुलाए

अपनी गोद में हमें बिठाए
कहानी कुछ सुनी-सुनाए
अपनों का दर्द-राग
पक्षियों का प्रेम-पिपास
या हो विरह गीत अनमोल
छुपे रोम-रोम में तेरे
सबको तुम भाते थे
हरयाली दे जाते थे
ममतामयी छाव में
सुकून दे जाते थे
हर आनेवाला जाएगा
विधि का यह विधान
फिर आई एक दिन
वो मनहूस तूफानी शाम
तेरे जाने से,
वो शोर-शराबा
थम-सा गया है
वक्त जैसे
ठहर-सा गया है
तेरे बिन, बाका ट्री
भटकती है तन्हाइयाँ
मौन हुई कहानियाँ ।।

4. ***आरजू***

इंतजार की आरजू अब नहीं रही
खामोशियों की आदत हो गई है
न कोई शिकवा है न शिकायत
अजनबियों सी हालत हो गई है
चुभती रहती चाँदनी
बड़ी कठिन ये रात हो गई है
एक तेज हूक उठती है मन में मेरे
खुशी भी इतेफाक हो गई है
अब है तो सिर्फ तन्हाई
जो एकांत भरी भीड़ दे गई है

न जाने है ये अश्क कैसे बावरे
जो बिन बादल बरसात दे गई है
बिन तेरे,
उदासी है छाई
जिंदगी मेरी
एक वनवास हो गई है ||

5. ***फीजी कितना प्यारा है!***

प्रशांत महासागर से घिरा
चमचमाती सफ़ेद रेतों से भरा
फीजी द्वीप हमारा
देखो, कितना प्यारा है!
सर्वत्र छाई हरयाली ही हरयाली है
फल-फूलों से भरी डाली-डाली
फसलों से लहराते गन्ने के खेतों में
गुणगुनाती मैना प्यारी है
लोग यहाँ के कितने प्यारे
कभी 'बुला', कभी 'राम-राम'
कह हँस बोला करते
हिल-मिलकर एक दूजे का
 साथ निभाते
हँसते-खेलते समय बिताते
बहुभाषीय और बहुसांस्कृति का
नारा लगाते
सच में यह!
स्वर्ग बड़ा निराला है
हमारा जन्म हुआ इस भूमि पर
अन्न यही का खाएं हम
खेले इसकी गोद में
अब वतन यही हमारा है
फीजी द्वीप हमारा
देखो, कितना प्यारा है।

6. ***दो बूंद बारिश***

है तपिश बहुत, आग लगी खलियानों में
घर के कमरों में भी भट्टी एक सुलगती है
बाग में फूल खिले, पर उनमें वो लाली नहीं झलगती है
आ❁गन में आम की छाया, पर उसमें भी चैन कहाँ
कृषक हो रहे उदास, होठों पर उनके मुस्कान नहीं
हे प्रभू! तेरे कृपा बिन ये आग न बुझने वाली
निराशा के बादल छा❁ट, आशा के मेघ बहा
बुझा धरा की प्यास, दो बूंद बारिश तो भेज!

7. **रिश्ते**

रिश्ते रिस्ते-रिस्ते
घिस से गए हैं
फेसबुक व व्हाट्स्ऐप तक
सिमट गए हैं
आज की दौड़ में
संबंधे मतलब भर
रह गए हैं
कभी बनते-बिगड़ते
क्षणिक लगते हैं
स्वतंत्रता की चाह में
अपने दूर हो रहे हैं
अपनापन, प्यार व खुशी
चहेरे से लुप्त हो रहे हैं
एकाकी की तनाव में
रिश्ते भार बन गए हैं ।।